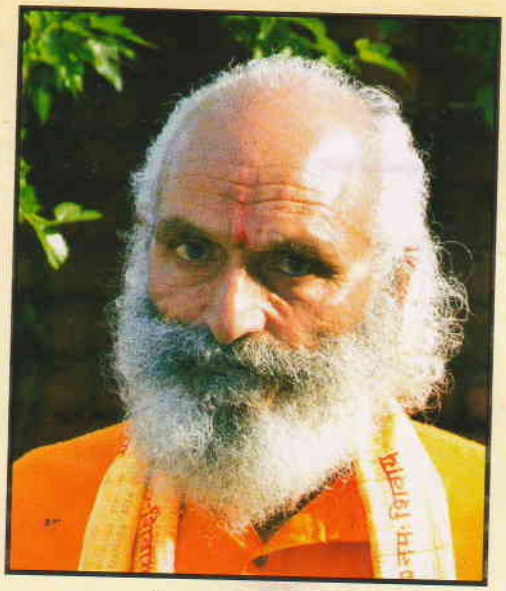

Ram Rattan Sharma (Ex. M.L.A.)
Chairman
Deen Dayal Upadhyay B.Ed. College
Management Committee
Mehre, Distt. Hamirpur (H.P.)

संदेश

प्रिय विद्यार्थियों

मनुष्य का जीवन भगवान् की अदभूत कृति, उपहार अमुल्यवान, छोटे उद्देश्यों जीना, जीवन का अपमान हैं, हमें भगवान् ने आपार, मुल्य शक्तियाँ प्रदान की हैं हमारी प्रतिभाएँ भी विराट हैं। अपनी शक्तियों को तुच्छ कार्यों विषय वासनाओं में जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद करना जीवन का तिरस्कार है । हम अपनी शक्तियों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व आध्यात्मिक प्रयोग केवल 5 प्रतिशत ही कर पाते है । हमारी अधिकांश शक्तियाँ सुप्त ही रह जाती है । यदि हम अपनी आन्तरिक क्षमताओं का उपयोग करें तो हम पुरूष से महापुरूष, युगपुरूष, मानव से महामानव बन जाते हैं । पुरूषार्थ से मर्यादापुरूषोत्तम भगवान राम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, गुरूनानकदेव, गुरूगोविंद सिंह, महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, इस युग के योगऋर्षि स्वामी रामदेव श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी ने सारे संसार को योग आर्युवेद एवं अध्यात्मिक शिक्षा प्रदान अपने पुरूषार्थ से की है ।

वे समस्त शक्तियाँ हमारे भीतर सत्रिहित हैं। पुरूषार्थ, योग, अध्यात्मिक अभ्यास की कमी से स्वयं में दीन–हीन, दुःखी, असहाय या अकेला मान बैठते हैं । प्रतिदिन, प्रतिपल, "अहं ब्रह्मस्मि" मैं विराट हूँ, मैं परमात्मा का प्रतिनिधि हूँ । इस पृथ्वी पर मेरा जन्म एक महान् उद्देश्य के लिए हुआ है । मुझमें धरती सा धैर्य, अग्नि सा तेज, वायु सा वेग, जल जैसी शीतलता व आकाश व आकाश जैसी विराटता है, मेरे मस्तिष्क में ब्राह्मण सा तेज, मेघा, प्रज्ञा व विवेक है । मेरी भुजाओं में क्षत्रिय जैसा शौर्य, पराक्रम व स्वाभिमान् है । मेरे उदय में वैश्य जैसा व्यापार, कुशल प्रबन्धक व शुद्रवत सेवा करने को मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ । मैं एक व्यक्ति नहीं, मैं एक संस्कृति हूँ । मैं एक ऋषियों की वंश परम्परा का संवाहक हूँ । मुझमें भारत है मैं भारत से हूँ । मैं एक भारती का अमृत पुत्र/पुत्रि हूँ ।

"माता भूमि : पुत्रोउहं पृथिव्याः"

मैं भूमि, भवन, पद सत्तायुक्त रूप यौवन नहीं, मैं नाशवान् देह नहीं मैं अजर अमर नित्य अविनाशी, ज्योतिर्मय व तेजोमय आत्मा हूँ । आप गुरू बनने जा रहे हैं। गुरूओं के निर्माण से राष्ट्र, समाज का उत्थान हेतू स्वयं चरित्रनिर्माण से शारीरिक, मानसिक, बौधिक, नैतिक, आर्थिक, अध्यात्मिक, संस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक विकास वैदिक संस्कृति सुधार पर मानव निर्माण की उपेक्षा आप से है । ऐसे चरित्रवान गुरूओं से भारत एवं सम्पूर्ण विश्व का कल्याण होगा ।

धन्यवाद ।